RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-03
March-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

जैन समुदाय का शिक्षा के विकास एवं शैक्षणिक संस्थानों के विकास में योगदान

शशि कुमार

शोधार्थी, भूगोल विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

परिचय :

वैश्वीकरण के दौर में संपूर्ण विश्व एक गाँव का रूप ले चुका है। फलतः किसी क्षेत्र/शहर या नगर पर कई संस्कृतियों का प्रभाव देखने को मिलता है। भारत और बिहार के साथ ही निचले स्तर पर आरा नगर के साथ भी यही बात लागू होती है। इस नगर में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई एवं जैन संप्रदाय के लोग सभी साथ-साथ रहते हैं। तात्पर्य यह है कि इन सभी धर्मों/समुदायों एवं इनकी संस्कृतियों का प्रभाव आरा नगर के विकास पर पड़ा है।

संस्कृति के सभी पक्षों में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा के विकास के साथ संस्कृति में भी परिवर्तन आता जाता है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में किया गया कार्य संस्कृति का एक विशिष्ट पक्ष या पहलू है। प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत आरा नगर का शैक्षणिक परिदृश्य की व्याख्या एवं समीक्षा की गई है।

आरा जैसे प्राचीन ऐतिहासिक नगर में विभिन्न जाति एवं धर्मों के लोगों के साथ ही जैन धर्म के लोग भी निवास करते हैं। जैन धर्मालंबियों ने इस शहर के लागों की उन्नति एवं विकास के साथ ही राष्ट्र की उन्नति एवं विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

जैन धर्म इतिहास के नजर में :

ईसा पूर्व छठी सदी में जैन धर्म के 24वें तीर्थकर भगवान महावीर तप के क्रम में अनेक बार आरा होते हुए वाराणसी, कौशांबी, उज्जैन आदि नगरों तक गए थे। तीर्थंकर पद की प्राप्ति के बाद वे आरा के समीपवर्ती उधान में ठहरे थे। उनके यहाँ आगमन के बाद काफी संख्या में आरा के लोगों ने जैन धर्म को स्वीकार किया था।

इतिहासकारों के अनुसार ईसा पूर्व चौथी सदी में मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य की प्रेरणा से जैन धर्म स्वीकार किया था। इसके प्रभाव से तत्कालीन राजधानी पाटलिपुत्र के साथ ही आरा, मसाढ़, नौबतपुर, फतुहा, बाढ़ जैसे समीपवर्ती गाँवों में इस धर्म का प्रचार-प्रसार किया गया। साथ ही जैनियों की बस्तियाँ भी बसाई गई थों।

ईसा की प्रथम सदी काल की कई धातु मूर्तियों से तीथंकर की कई मूर्तियाँ, कल्पवृक्ष एवं धर्मचक्र आदि (काँसा निर्मित बहुमूल्य अवशेष) चौसा ग्राम (तत्कालीन आरा क्षेत्र) से प्राप्त किए गए हैं।

आरा से 9 किलोमीटर पश्चिम मसाढ़ ग्राम मौर्य काल से जैन धर्म एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है। यहाँ उत्खनन से प्राप्त मौर्य कालीन जैन सिंह मस्तक कला का एक नायाब नमूना है।

7वीं सदी में आरा का प्राचीनतम लिखित उल्लेख प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा विवरण में मिलता है। ह्वेनसांग चीन से भारत भ्रमण के लिए (629-645 ई० के दौरान) आया था। इस दौरान वह आरा के निकटवर्ती मसाढ़ ग्राम भी गया। उसने अपने विवरण में लिखा है कि मसाढ़ ग्राम में निग्रन्थों (जैनियों) की बड़ी बस्ती है। वे कई प्रकार की तपस्या करते हैं। यहाँ तालाब के किनारे विशाल जैन स्तूप है।

10वीं सदी के अंत में भारत में मुगलां (मुसलमानों) का आक्रमण शुरू हो गया। 1047 में महमूद गजनवी तथा 12 वीं सदी के अंत में गौरी पठानों द्वारा स्थानीय संस्कृति को तहस-नहस कर दिया गया। तत्पश्चात् मुगल शासन के दौरान धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण 16वीं सदी में सम्राट अकबर के प्रयासों से कायम हुआ। एक लंबे अंतराल के बाद जैन सहित विभिन्न धर्मावलंबियों ने अपने-अपने धर्म के विकास की ओर पुनः ध्यान देना शुरू किया। इस काल में अनेक धार्मिक एवं रचनात्मक कार्य हुए। आरा नगर भी उससे अछूता नहीं रहा।

अंग्रेजोंके शासन काल में कानून और व्यवस्था में सुधार होता गया। फलतः रोजगार तथा वाणिज्य के लिए तथा जमींदारी प्रथा के प्रारंभ होने के कारण सैकड़ों की संख्या में (17वीं सदी के अंत तक) लोग बिहार आए। बिहार के अन्य शहरों की तुलना में इस समय आरा शहर जैन धर्मावलंबियों का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। शिक्षा के क्षेत्र में काफी सराहनीय कार्य हुए। शैक्षणिक संस्थान की स्थापना एवं विकास पर किए गए कार्य इस प्रकार हैं-

शैक्षणिक संस्थाएँ :

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

जैन धर्म से संबंधित सभी मंदिर एवं चैतयालय जैन संस्कृति केकई पक्षों को प्रदर्शित करती है। इन मंदिरों के अलावा आरा में जैन लोगों द्वारा संस्थाएँ एवं धर्मशालाएँ तथा शैक्षणिक संस्थाएँ विकसित की गई है जो जैन संस्कृति के साथ ही साथ इस शहर की संस्कृति को और समृद्ध बनाती है। संस्कृति के सभी पक्षों में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा के विकास के साथ संस्कृति में परिवर्तन आता जाता है। अत: शिक्षा के क्षेत्र में किया गया कार्य संस्कृति का एक विशिष्ट पक्ष है। इस समाज ने आरा में शिक्षा के विकास हेतु कई कार्य किए है।

श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान एवं जैन सिद्धान्त भवन :

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध और 20वीं सदी के प्रारंभ में देवाश्रम परिवार क राजर्षि देव कुमार जी ने एक दिन प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों को तौलकर बिक्री होते हुए देखा, इस समय उनकी उम्र मात्र 21 वर्ष की थी। उसी वर्ष 1898 में उन्होंने यह प्रण किया कि जबतक प्राचीन शास्त्रों का उद्धार नहीं करूँगा। तब तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करूँगा। इसके बाद वे अगले चार वर्षों तक बैलगाड़ी द्वारा विभिन्न स्थानों का भ्रमण कर वहाँ के शास्त्रों की सुरक्षा की व्यवस्था करते रहे। कई जगह आलमारियाँ खरीद कर दी। कई जगह शास्त्रों की सूची भी बनाई। जिन स्थानों पर शास्त्रों को रखने की कोई व्यवस्था नहीं थी, वहाँ से शास्त्रों को संभालकर आरा लेकर आए। इन शास्त्रों के संग्रह एवं सुरक्षा व्यवस्था के लिए 1903 में श्री जैन सिद्धान्त भवन की नींव रखी। वर्त्तमान समय में जैन सिद्धांत भवन, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय द्वारा श्री देव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान के रूप में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध कार्यों के लिए मान्यता प्रदत्त संस्थान है।

आरा निवासी बाबू करोड़ी चंद तथा दानवीर श्री बच्चू लाल जी और श्री देवेन्द्र कुमार जी के सहयोग से निर्मित सरस्वती भवन में लगभग 10,000 से अधिक ताड़पत्रीय एवं हस्तलिखित ग्रंथों का भंडार है। इनमें अनेक ग्रंथ सोने-चाँदी के कलमों से चित्रित एवं लिखित है।

श्री जैन सिद्धान्त भवन में संग्रहित पाडुलिपियों, चित्रों एवं सिक्कों इत्यादि की स्थाई प्रदर्शन की व्यवस्था है, जिसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। वर्तमान में यह संस्था भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा पांडुलिपि संसाधन केन्द्र एवं पांडुलिपि सुरक्षा केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त है।

श्री जैन कन्यापाठशाला :

20वीं सदी के प्रारंभ में अशिक्षा एवं अज्ञानता के कारण तत्कालीन महिलाओं को विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ता था। समाज द्वारा उनकी अवहेलना और दुर्दशा असहनीय थी। पूरे बिहार प्रान्त में (उस समय) पटना के बांकीपुर में एकमात्र बालिका विद्यालय था। आरा जैसे छोटे शहरों से बालिकाओं को यहाँ आकर शिक्षा प्राप्त करना संभव नहीं था। परिणामस्वरूप, देवाश्रम परिवार के बाबू देवकुमार जी के नेतृत्व में बिहार प्रान्त का दूसरा एवं शाहाबाद जिले का प्रथम बालिका विद्यालय की नींव (1907) डाली गई। यह विद्यालय वर्तमान में जेल रोड (आरा) में अवस्थित है। यह विद्यालय अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष सफलतापूर्वक मना चुका है। जैन समाज के सत्प्रयासों से महिला शिक्षा के क्षेत्र में यह अतुलनीय देन है। वर्तमान समय में यह विद्यालय दानवीर बच्चू लाल जी द्वारा प्रदत्त भूमि एवं भवन में संचालित है।

श्री जैन बाला विश्राम विद्यालय

देवाश्रम परिवार के राजर्षि देवकुमार जी के छोटे भाई धर्मकुमार जी की अल्पायु में स्वर्गवास के समय उनकी पत्नी चंदाबाई मात्र 12 वर्ष की थी। विधवाओं की दयनीय (तत्कालीन समय में) स्थिति को देखते हुए चंदाबाई ने यह प्रण किया किवह अपनी शेष जिंदगी विधवाओं एवं परित्यक्ताओं को पढ़ाने एवं उनके जीवन स्तर को सुधारने में लगा देंगी। इस कार्य के लिए उन्होंने पढ़ना शुरू किया और मात्र 6 वर्षो की कड़ी मेहनत और लगन से 19 वर्ष की उम्र में काशी विद्यापीठ से पंडिता की उपाधि प्राप्त कर आरा लौट आयीं। आरा आने के बाद चंदाबाई ने अपने परिवार और गृह त्याग का दृढ़तापूर्वक संकल्प लिया और शहर से बाहर धनुपुरा गाँव में श्री जैन वाला विश्राम (1921) के नाम से विधवाओं एवं परित्यक्ताओं के लिए शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की।

इस आश्रम की पहली शिक्षिका स्वंय चंदाबाई जी बनी। जिनके धर्म, प्रेम, अनुशासन प्रियता एवं दृढ़निश्चयता के कारण इस संस्था की कीर्ति देश के हरेक भाग में फैली। फलत: कनार्टक, केरल, महाराष्ट्र जैसी सुदूर प्रान्तों से बालिकाएँ एवं महिलाएँ यहाँ पढने के लिए आने लगी।

इस संस्था की कीर्ति के कारण देश के कई दिग्गज नेताओं का आगमन यहाँ होता रहा है। चंदाबाई अपने जीवन के अंतिम समय तक इस संस्था के उद्देश्यों के प्रति समर्पित रही। मृत्यु के पूर्व नियमपूर्वक आर्चिका की दीक्षा लेकर उन्होंने शरीर त्याग दिया। इस संस्था के शांत और मोहक वातावरण में आकर प्रत्येक भारतवासी गर्व महसूस करता है। स्त्री शिक्षा और विशेषकर विधवा शिक्षा के क्षेत्र में जैन समाज का यह योगदान मील का पत्थर है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

श्री जैन बाला विश्राम एवं उच्च विद्यालय

धनुपुरा स्थित श्री जैन बाला विश्राम के छात्रावास में रहनेवाली बालिकाओं एवं महिलाओं को आधुनिक एवं उच्च शिक्षा देने के उद्देश्य से देवाश्रम परिवार के कर्मठ श्री सुबोध कुमार जी जैन ने आश्रम के निकट एक विशाल भूखंड खरीदकर (1962)में एक उच्च एवं माधयमिक विद्यालय की स्थापना की। इस विद्यालय में नैतिक शिक्षा के अलावा संगीत एवं कम्प्यूटर आदि के बारे में भी शिक्षा दी जा रही है। यहाँ नजदीकी क्षेत्र के लगभग 1200 छात्राएँ इस शिक्षा का लाभ उठा रही है।

श्री हर प्रसाद दास जैन कॉलेज

जैन धर्मावलंबी श्री हर प्रसाद दास जी की हार्दिक इच्छा थी कि आरा शहर के सभी बच्चां के लिए उच्च शिक्षा की व्यवस्था हो। अपने इस जनकल्याणकारी शिक्षा को पूरा करन के लिए अपनी मृत्यु के पूर्व वसीयतनामा में ट्रस्टियों को निर्देश दिया कि वे आरा में अतिशिघ्र एक महाविद्यालय की स्थापना करें। उनकी इस इच्छा के अनुरूप श्री आदिनाथ ट्रस्ट के तत्कालीन अध्यक्ष निर्मल कुमार जैन (देवाश्रम परिवार) ने सभी ट्रस्टियों के सहयोग से 1942 में हर प्रसाद दास जैन कॉलेज की स्थापना आरा रेलवे स्टेशन के निकट की। इसे प्रदेश का पहला महाविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है। वर्तमान में वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के अंतर्गत यह एक अंगीभूत महाविद्यालय है। यहाँ लगभग 150 शिक्षक एवं 100 के लगभग कर्मचारीगण कार्यरत हैं। इस महाविद्यालय ने राज्य/प्रांत को कई विभूतियाँ प्रदान की है। आज भी यह महाविद्यालय प्रतिवर्ष हजारों विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान कर उनके जीवन की सँवारने में लगा है।

श्री आदिनाथ नेत्रविहीन एवं मूक-वधिर विद्यालय :

श्री धर्मावलंबियों द्वारा बालक, बालिकाओं, विधवओं तथा महिलाओं की प्राथमिक से लेकर महाविद्यालय स्तर तक की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की गई। किन्तु उनके दिल में असहाय एवं विकलांगों की शिक्षा और पुनर्वास की व्यवस्था करने की इच्छा जागृत हुई। इस पवित्र एवं लोक कल्याणकारी कार्य का दायित्व देवाश्रम परिवार के कर्मठ समाज सेवी श्री सुबोध कुमार जैन ने उठाया। उन्होंने श्री जैन महिला विद्यापीठ के नाम से सोसाइटी एक्ट के तहत संस्था निबंधित कराकर आरा मूक वधिर विद्यालय (1962) तथा नेत्रहीनों के लिए श्री आदिनाथ नेत्रहीन विद्यालय की स्थापना (1964) समाज के सहयोग से की वर्तमान में आरा मूक वधिर विद्यालय महाजन टोली नं-1 में देवाश्रम परिवार द्वारा प्रदत भवन में चल रहा है जबकि श्री आदिनाथ नेत्रहीन विद्यालय (वर्तमान में) धनुपरा गाँव में भगवान आदिनाथ जिनालय परिसर में संचालित है। यहाँ विद्यार्थियों को नि:शुल्क शिक्षा दी जाती है। यही नहीं नेत्रहीन बच्चों के पुनर्वास के लिए करधे से कपड़ा तैयार करना, मोमबती बनाना आदि जैसी व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जा रही है।

श्री जैन महिला विद्यापीठ स्कूल महाजन टोली नं- 1 में संचालित है जहाँ 150 बच्चें शिक्षा पा रहे हैं।

हर प्रसाद दास जैन स्कूल :

बिहार प्रान्त में माध्यमिक स्तर तक के छात्रों की आधुनिक शिक्षा प्रदान करने में आरा शहर का हर प्रसाद दास जैन स्कूल अग्रणी है। यहाँ का अनुशासन एवं पढ़ाई का स्तर काफी अच्छा है। इसकी स्थापना श्री हर प्रसाद जी द्वारा 1920 में की गई थी। वर्तमान समय में यहाँ लगभग 2000 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रह हैं।

श्री जैन सिद्धांत भवन:

आरा शहर में साहित्य के क्षेत्र में जैन समाज का प्रमुख यागदान, श्री जैन सिद्धांत भवन के रूप में जाना जाता है। यह एक महत्वपूर्ण शास्त्र भंडार है। यहाँ विभिन्न भाषाओं की हजारों दुर्लभ पांडुलिपियाँ सुरक्षित है। इसके संस्थापक एवं संचालक बाबु निर्मल कुमार जैन थे लगभग 23 वर्षो (1932-1946) तक श्री भुजबली जी इसके व्यवस्थापक के रूप में कार्यरत रहे। श्री जैन सिद्धांत भवन के पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में उन्होंने कई दुष्कर कार्य किए। देश के इस प्रमुख ग्रंथागार में विभिन्न भाषाओं की हजारों-हजार हस्तलिखित एवं ताड़पत्रीय पोथियाँ विद्यमान है। श्री भुजबली के कार्यभार ग्रहण करने के पहले भवन स्थित ग्रंथों की तालिका वैज्ञानिक आधार पर निर्मित नहीं थी। फलत: पुस्तकों को ढूँढने में अनावश्यक परिश्रम करना पड़ता था। कुछ पांडुलिपियों के पन्ने भी उड़े हुए थे। कठिन परिश्रम करके (कागज) हस्तलिखित पोथियाँ को उन्होंने सुधारा। सभी ग्रंथों को नाम के अनुसार सिलसिलेवार ढंग से क्रमबद्ध किया। कई पोथियों को कर्नाटक एवं तमिलनाडु से अत्यधिक धन व्यय कर मँगाई गई थी। ये पोथियों भी बिना कैटलॉग किए रखी गई थी। श्री भुजबली ने यहाँ आते ही सर्वप्रथम भवन स्थित सभी प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रंथों की सूची तैयार की। इनके द्वारा निर्मित ग्रंथ की सूची काफी सहायक सिद्ध हुई जो आगे चलकर भवन में संस्कृत, प्राकृत, हिन्दो शास्त्रों की सूची शीर्षक से प्रकाशित हुई। 1933 में उन्होंने अंग्रेजी पुस्तकों की भी तालिका निर्मित की।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

यहाँ रहकर श्री भुजबली ने प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं साहित्य का गहन अध्ययन किया। साथ ही कई ग्रंथों की प्रशस्तियों का संग्रह एवं संकलन कर प्रशास्त संग्रह नाम से प्रकाशित करवाया। इस प्रशस्ति संग्रह की भूरि-भूरि प्रशंसा करनेवालों में डॉ0 श्याम शास्त्री, विद्याभूषण शरतचंद घोषाल, डॉ0 शेष गिरि राव, राय बाहादुर नरसिंहाचार्य तथा चिंताहरण चक्रवर्ती जैसे सुप्रसिद्ध विद्वान शामिल हैं। यह प्रशस्ति संग्रह शोध कार्य क लिए मील का पत्थर साबित हुआ है।

श्री जैन सिद्धांत भवन का 106 वाँ वार्षिकोत्सव (2009)

1903 में स्थापित श्री जैन सिद्धांत भवन का 106 वाँ वार्षिकोत्सव 2009 में बालाचार्य श्री 108 कल्पवृक्ष नंदी जी महाराज एवं मुनि श्री 108 आदि सागर जी महाराज के मंगल कार्य एवं व्रत पूजन द्वारा आरंभ हुआ। जैन कन्या पठशाला मध्य विद्यालय की छात्राओं द्वारा मंगलाचरण एवं भजन की प्रस्तुति की गई। जिनवाणी एवं व्रत स्कंध की पूजा अर्चना भी की गई।

राष्ट्रीय पांडुलिपि सप्ताह (2009)

आरा स्थित पांडुलिपि मिशन के सहयोग से श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान एवं श्री जैन सिद्धांत भवन द्वारा पांडुलिपि सप्ताह का आयोजन किया। इसका उद्घाटन वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा के तत्कालीन कुलपति प्रो0 (डॉ0) रामपाल सिंह श्री 108 द्वारा बालाचार्य कल्पवृक्ष नंदी जी के सानिध्य एवं सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में 28 मई 2009 को किया गया। इस भवन में जैन धर्म के अतिरिक्त जैनेत्तर धर्मो को मिलाकर लगभ 1000 हस्तलिखित एवं ताड़पत्रीय ग्रंथ संग्रहित है। यह भवन विडियों, ऑडियों कैसेट हस्तलिखित ग्रंथों का माइक्रोफिल्म तथा ग्रंथों को सी0डी0 भी उपलब्ध कराने में सक्षम है।

यह स्पष्ट है कि आरा नगर में शैक्षणिक विकास हेतु जैन समाज द्वारा उल्लेखनीय कार्य किए गए हैं। शैक्षणिक वातावरण को बनाने और उसमें वृद्धि और विकास के लिए जैन समाज कृत संकल्प है। नारी शिक्षा, विधवा शिक्षा और यहाँ तक कि मूक वधिर एवं नेत्रहीनों को भी शिक्षा प्रदान कर मुख्य धारा में लाने के लिए जैन समाज द्वारा कई संस्थाएँ चलाई जा रही हैं। जिससे शहर के लोगों में विविध कार्यो के लिए जागृति पैदा की जा रही है।

वास्तव में जैन संस्कृति का विकास आरा शहर के विकास के साथ तथा आरा शहर का विकास जैन संस्कृति के विकास के साथ जुड़ा-प्रतीत होता है।

जैन समुदाय के विकास के अतिरिक्त सांस्कृतिक दृष्टि से आरा के कई लोगों ने यहाँ की शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, पत्रकारिता, रंगमंच एवं फिल्मी दुनिया के क्षेत्र में अपनी कामयाबी का झंडा बुलंद किया है। ब्रिटिश काल में जब हिन्दी की उपेक्षा की जा रही थी, उसी समय आरा के साहित्य प्रेमियों ने देवनागरी लिपि के प्रचार-प्रसार पर जोर दिया। उत्तर भारत के काशी तथा आरा में हिन्दी साहित्य के विस्तार के लिए नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई। फलत: 1916 में कैथी भाषा/लिपि के स्थान पर नागरी लिपि में सरकारी रजिस्टर एवं एवं फार्म आदि मुद्रण किया जाने लगा। नागरी प्रचारिणी के अतिरिक्त आरा शरह में बाल हिन्दी पुस्तकालय, अंबेडकर पुस्तकालय तथा देव कुमार ओरिएंटल लाइब्रेरी (शहर में) साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति को संजोने का काम कर रही है।

देवनागरी लिपि के अतिरिक्त आरा में उर्दू शायरी की भी बेमिसाल परंपरा रही है। यहाँ कई जानेमाने उर्दू शायर हुए जिनसे उर्दू शायरी रोशन होती रही है जिनमें शेख अनवर अली, सैयद शाह मुहम्मद बाकर, डॉ0 करीररूदीन अख्तर एवं डॉ0 शमशाद हुसैन उल्लेखनीय है।

आज आरा नगर एवं इसके आस-पास जैन समुदायों की लगभग 50 मंदिरें हैं। इतनी संख्या में शायद ही किसी एक शहर/नगर में जैन मंदिर (भारत में) होंगे। ये मंदिर एवं चैत्यालय जैन संस्कृति के कई पक्षों को दर्शाते हैं। मंदिरों एवं शिक्षण संस्थानों के अलावा कई अन्य संस्थाएँ, धर्मशालाएँ एवं औषधालय भी जैन लोगों द्वारा बनवाए गए हैं। जिनमें जैन प्राच्य शोध संस्थान, हरखेन कुमार जैन दिगंबर भवन एवं धर्माथ औषधालय, श्रीमती चंपामणि दात्व्य औषधालय, श्री हरखेन कुमार जैन चिकित्सा केन्द्र उल्लेखनीय हैं।

इन सभी मंदिरों, धर्मशालाओं, शिक्षण संस्थाओं एवं औषधालयों से प्रति वर्ष हजारों की संख्या में लोग लाभान्वित होते आ रहे हैं। मानव सेवा की दृष्टि से आरा नगर में किए गए ये सभी अतुलनीय कार्य है। हजारों की संख्या में इन शिक्षण-संस्थाओं से शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी अपने जीवन को सही दिशा देने में सफल हो रहे हैं। साहित्य के क्षेत्र में श्री जैन सिद्धांत भवन का योगदान प्रमुख है। यहाँ विभिन्न भाषाओं की हजारों दुर्लभ पांडुलिपियाँ सुरक्षित है।

निर्धनों एवं असहायों तथा आमजनों की सेवा को अपना कर्त्तव्य समझकर वर्त्तमान पीढ़ी भी इस दिशा में क्रियाशील है।

निष्कर्षत: आरा नगर में शैक्षणिक वातावरण को बनाने और उसमें वृद्धि और विकास के लिए जैन समाज कृत संकल्प

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

है। शिक्षा, विधवा शिक्षा यहाँ तक कि मूक-वधिर एवं नेत्रहीनों को भी शिक्षा प्रदान कर मुख्य धारा में लाने के लिए जैन समाज कई कार्य कर रहा है जिससे शहर के लोगों में विविध कार्यो के लिए जागृति पैदा हो रही है।

निष्कर्षत: जैन संस्कृति आरा की संस्कृति तथा आरा की संस्कृति जैन संस्कृति का पर्याय बन चुकी है। इसे एक-दूसरे से अलग करके नहीं देखा जा सकता है संस्कृति के कई अन्य पहलू हैं, जिनके सहारे कई और भी निष्कर्ष निकाले जो सकते हैं। नगर के 1000 (एक हजार) लोगों पर (जैन एवं गैर समुदाय) किए गए सर्वेक्षण कार्य, साक्षात्कार एवं प्रश्नवली के द्वारा यह बात स्पष्ट हुआ कि जैन संस्कृति का आरा नगर के विकास पर प्रभाव पड़ा हैं।

विकास की संभावनएँ एवं जैन संस्कृति की चर्चा की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि विकास का सीधा संबंध आर्थिक विकास संबंधी गुणात्मक एवं परिणात्मक परिवर्तन से है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में पंचवर्षीय योजनाओं की शुरूआत नियोजित उद्देश्य से की गई। अर्थव्यवस्था में विविधीकरण की प्रक्रिया का सहारा विकास की गति को तीव्र करने के लिए लिया गया है। इसके लिए यह जरूरी है कि स्थानीय एवं क्षेत्रीय संसाधनों का उपयोग हो, यही बात बिहार के भोजपुर जिला एवं यहाँ के आरा नगर के साथ भी लागू होती है।

आरा एक नगरीय क्षेत्र है जहाँ स्वभावत: गैर-प्राथमिक कार्यो की बहुलता हैं। यहाँ पूँजी निवेश के साथ ही साथ पूँजी निवेश करने वाला एवं जोखिम उठानेवाला साहसी वर्ग उपलब्ध है। आरा नगर में जैन समाज ऐसे ही जरूरतों को पूरा करनेवाला समाज है।

विकास कार्यो के लिए राज्य सरकार के विकास एवं आवास विभाग ने राज्य के 28 नगरों के लिए (इनमें आरा नगर भी शामिल है।) विकास योजनाएँ तैयार की है ये योजनाये 2010 से 2030 तक के लिए बनाई गई है। ये योजनाएँ ब्रिटिश सरकार के अंतराष्ट्रीय विकास विभाग द्वारा वित पोषित (SPUR) के तहत बनाई गई है। लगभग 31 वर्ग किलोमीटर (2001) के क्षेत्र में फैला (वर्तमान में 49 वर्ग किलोमीटर) यह नगर जिले में सब्जी एवं अनाज के व्यापार के लिए क्षेत्रिये हब के रूप में काम करता है जिसमें और सुधार एवं विकास की संभावनाएँ है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved